'बालमन पर परिवेश का प्रभाव: अभिभावकों की बड़ी चुनौती!

द्रौपदी साहू

हर माता-पिता या अभिभावक अपने बच्चों को संस्कारवान बनाना चाहते हैं। वे अपने बच्चों के हित और उनकी इच्छानुरूप हर कार्य करते हैं। उनकी खुशियों में कोई कमी न रह जाए इसका भी पूरा ख्याल रखते हैं। इसके बावजूद भी बच्चे अपने माता-पिता या अभिभावक को उचित सम्मान नहीं देते। क्योंकि बच्चों के आसपास का वातावरण उसे हर तरफ से प्रभावित करता है। उसे सारी सुविधा दे देने भर से उसके मन-मस्तिष्क को प्रभावित नहीं किया जा सकता। उन्हें सुसंस्कृत बनाने के लिए सर्वप्रथम पारिवारिक वातावरण को संतुलित रखना आवश्यक है क्योंकि सीखने की प्रक्रिया परिवार से ही शुरू होती है। वह परिवार के प्रत्येक सदस्य को देखता है, उसके साथ रहता है, उनके बोलचाल, रहन-सहन, खान-पान, व्यवहार, व अन्य क्रियाकलापों से परिचित होता है। इन सारी चीजों को देख सुनकर वह अनुकरण करता है और धीरे-धीरे वह उसके व्यवहार में सदा के लिए शामिल होते जाता है। बच्चे को समय देना, उसके साथ संवाद करना भी परमावश्यक है। इससे बच्चे अपने मन की बातों को सहजता से अपने माता-पिता या अभिभावक के समक्ष रख पाएँगे। जब वे अपनी बात नहीं कह पाते और दबाते हैं तो उनमें डर पैदा होता है और हर वक्त डरे-डरे से रहने लगते हैं। उनमें आत्मविश्वास की भी कमी होने लगती है, किसी भी चीज में उनका मन नहीं लगता और वे चिड़चिड़े, गुस्सैल स्वभाव के बनने लगते हैं। हम देखते हैं कि जिस घर में प्रेम पूर्वक बातचीत, संवाद होता है वहाँ के बच्चे भी प्रेम पूर्वक बातें करते हैं। उनकी बातों में एक अलग मिठास और सुकून होता है। इसी तरह जिस घर में विवाद पर झगड़े होते रहते हैं वहाँ के बच्चे उन विवाद ग्रस्त माहौल से चिड़चिड़े, तेज आवाज में बात करने वाले होते हैं। वे बड़ों की बातों को भी मानने से इनकार करते हैं और अपनी मनमर्जी करते हैं। वे स्वच्छंद रहना पसंद करते हैं। घर के लोग भले ही उन्हें अनुशासित रखने की पूरी कोशिश करते हैं, पर अनुशासन उन्हें बोझ प्रतीत होता है। इसके अलावा आस पड़ोस का माहौल, विद्यालय में शिक्षक व अन्य बच्चों से बातचीत व उनका व्यवहार व उनसे मिली जानकारी, विद्यालय का अनुशासन आदि भी उनके व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

आज से यदि 25 साल पहले की बात करें तो अधिकांश गाँव-शहरों में बिजली की सुविधा भी नहीं थी। मुझे आज भी याद है जब मैं छोटी थी, तब शाम होते-होते घर में खाना बना लिया जाता था। माता-पिता घर के सारे काम शाम तक पूरा करके रात में हमारे पास हमें पढ़ाने के लिए बैठते तो हमारे सामने मिट्टी तेल से जलती छोटी चिमनी हुआ करती थी। कभी-कभी पढ़ते-पढ़ते नींद में ऊँघने लगते तो चिमनी में बाल झुर्रा जाते थे। आज कुछ पहाड़ी क्षेत्रों को छोड़कर हर घर तक बिजली की सुविधा पहुँच गई है। नए-नए आविष्कारों से आज अनेक सुविधाएँ मिल रही हैं। डिजिटल कार्यों की वृद्धि से मोबाइल, इंटरनेट की अनिवार्यता हर किसी की दिनचर्या में शामिल हो गया है। इन सभी सुविधाओं के साथ आज के बच्चे आभासी दुनिया की ओर आगे बढ़ रहे हैं। घर में छोटे से छोटा बच्चा मोबाइल इंटरनेट से परिचित है। घर में काम के दौरान जब बच्चा रोने

लगता है तब उसे मोबाइल दे देना एक आम बात हो गई है लेकिन यह एक बड़ी समस्या को जन्म दे रही है। बच्चा मोबाइल का आदी बन जाता है। बाद में जब उसे मोबाइल देने से मना करते हैं तब वह गुस्सा होकर रोने लगता है। कभी-कभी मारने भी लगता है। उसे कुछ कहें तो वह बात भी नहीं सुनता, माता-पिता कभी-कभी यह भी सोच लेते हैं कि बड़ा होकर जब स्कूल जाएगा तो यह आदत छूट जाएगी लेकिन ऐसा नहीं होता। जब बच्चा स्कूल जाता है तब तक भले ही मोबाइल से दूर रहता है पर उसका ध्यान अक्सर उसी में रहता है और घर आते ही मोबाइल की मांग करता है। इस तरह जब अभिभावक बच्चों को अपना समय नहीं दे पाते, उससे संवाद नहीं कर पाते तो वे आभासी दुनिया के अंधकार में डूबने लगते हैं। आभासी पटल पर वे जो भी देखते -सुनते हैं, उनके व्यवहार में वह शामिल होते जाता है। आज बच्चे दादी-नानी की कहानियों से वंचित, इंटरनेट में सोशल मीडिया पर घूम रहे विभिन्न वीडियो और खेलों में मस्त हैं। वे दोस्तों के साथ भी खेलना नहीं चाहते बल्कि मोबाइल पर ही वीडियो गेम व वीडियो देखने में रुचि रखने लगे हैं। ये आदत उन्हें शारीरिक व मानसिक रूप से खोखली बनाती जा रही है, आज प्रत्येक अभिभावकों के लिए यह एक बड़ी चुनौती है। बच्चों को उचित मार्गदर्शन देना और संतुलित परिवेश निर्मित करना अति आवश्यक है।

बच्चों में पढ़ने-लिखने की क्षमता को अधिक से अधिक विकसित करें, उनसे संवाद करें, उनकी बातों को भी सुनें, उनके साथ खेलें, उनके पढ़ने-लिखने के कार्यों में भी सहयोग करें। किसी विषय को लेकर उनसे बातें करें, उनसे पूछें कि वे उस विषय पर क्या सोचते हैं। भविष्य में वे क्या बनना पसंद करेंगे। उन्हें क्या-क्या अच्छा लगता है। उन्हें पढ़ने के लिए बाल साहित्य उपलब्ध कराएँ जिससे उनका बौद्धिक विकास हो सके। घर का परिवेश भी खुशनुमा बनाएँ, हर अभिभावकों को अपने अनुचित व्यवहार को भी बदलना होगा। तभी बच्चे उनकी कही बातों को मानेंगे और उनके उचित व्यवहार का अनुकरण कर सुसंस्कृत बनेंगे। बच्चों को बचपन में मिली सीख और संस्कार ही उन्हें एक अच्छा व्यक्ति बनने और राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित करते हैं।